प्रातः क्लास 20/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते हैं यह तो समझाया है रूह ही सभी कुछ समझती है। इस समय तुम बच्चों को रूहानी दुनिया में बाप ले जाते हैं। उनको कहा जाता है रूहानी दैवी दुनिया। बच्चे समझते हैं दैवी दुनिया थी। अभी मनुष्यों की दुनिया है। दैवी दुनिया तो बहुत ही पवित्र थी। अर्थात् मनुष्य बहुत पवित्र थे। अभी हम अपवित्र हैं। इसलिए उन देवताओं का गायन–पूजन आदि करते हैं। यह स्मृति में है कि बरोबर पहले2 झाड़ में एक ही धर्म होगा। विराट रूप में झाड़ भी समझाने का जरूर है। इसलिए झाड़ का बीजरूप ऊपर में है। झाड़ का बीज है बाप। फिर जैसा बीज वैसा फल अथवा पौ निकलते हैं। यह भी वन्डर है ना। कितनी छोटी चरज कितना फल देती है। कितना उनका रूप बदलता जाता है। इसलिए मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ को कोई भी जानता। उनको कहा जाता है कल्पवृक्ष। इनका वर्णन सिर्फ गीता में ही है। सभी जानते हैं गीता ही नम्बरवन धर्म का शास्त्र है। शास्त्र भी नम्बरवार होते हैं ना। जैसे नम्बरवार धर्मों की स्थापना होती है। यह भी सिर्फ तुम ही समझते हो। और कोई में यह ज्ञान नहीं है। तुम्हारी बुद्धि में है पहले2 किस धर्म का झाड़ होता है। फिर उनमें और धर्मों की वृद्धि कैसे होती है। उनको कहा जाता है विराट नाटक। बच्चों की बुद्धि में सारा झाड़ है। झाड़ की उत्पत्ति कैसे होती है मुख्य बात है यह। देवी–देवताओं का झाड़ अभी नहीं है। और सभी टार–टारियाँ खड़ी है। बाकी आदि सनातन देवी–देवता धर्म का फाउंडेशन है नहीं। यह भी गायन है एक आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना करते हैं। बाकी और सभी धर्म विनाश हो तो हैं। अभी तुम जानते हो हमारी दैवी धर्म की स्थापना हो रही है। कितना छोटा सा दैवी झाड़ होगा। फिर और सभी इतने धर्म होंगे ही नहीं। विनाश हो जावेगा। झाड़ पहले छोटा होता है फिर बड़ा होता जाता है। बढ़ते2 अभी कितना बड़ा हो गया है। अभी इनकी आयु पूरी होती है। इससे बनीयन ट्री का मिसाल बहुत अच्छा समझाते हैं। यह भी है गीता; परन्तु तुम जानते हो बाप सम्मुख बैठ समझाते हैं। जिससे तुम राजाओं का राजा बनते हो। फिर भक्तिमार्ग में यह गीता शास्त्र आदि बैठ बनाया है। यह भी अनादि बना हुआ है। फिर भी ऐसे ही होगा। फिर जो–जो धर्म स्थापन होंगे, क्राइस्ट का बाइबल, बौद्धियों का अपना शास्त्र, सिक्ख धर्म का अपना शास्त्र होगा ना। अभी तुम्हारी बुद्धि में वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी नाच रही है। ज्ञान डांस कर रही है। तुम सारे झाड़ को जान गये हो कैसे2 धर्म आते हैं। कैसे वृद्धि को पाते हैं। फिर अपना एक धर्म स्थापन होता है बाकी सभी खलास हो जाते हैं। गाते हैं ना ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अंधेर विनाश। अभी बिल्कुल अंधियारा है ना। कितने ढेर मनुष्य हैं। यह इतने सभी होंगे ही नहीं। इन ल0ना0 के राज्य में यह नहीं थे। फिर एक धर्म की स्थापना होनी ही है। यह नालेज बाप ही आकर सुनाते हैं। तुम बच्चे कमाई के लिए कितनी नॉलेज आकर पढ़ते हो। बाप टीचर बनकर आते हैं तो आधा कल्प तुम्हारी कमाई का प्रबन्ध हो जाता है। तुम बहुत धनवान बन जाते हो। तुम जानते हो हम अभी पढ़ रहे हैं। यह है अविनाशी ज्ञान रत्नों की पढ़ाई। भक्ति को अविनाशी ज्ञान रत्न नहीं कहेंगे। भक्ति में मनुष्य जो कुछ पढ़ते हैं उनसे घाटा ही होता है। रत्न नहीं बनते। ज्ञान रत्नों का सागर एक बाप को ही कहा जाता है। बाकी वह है भक्ति। उनमें एम ऑबजेक्ट कोई भी नहीं। कमाई है नहीं। कमाई के लिए स्कूल में पढ़ते हैं। फिर भी करने लिए अच्छे गुण धारण करने लिए गुरु के पास जाते हैं। गुरु से गुण मिलनी चाहिए; परन्तु वह है अल्पकाल एक जन्म के लिए। कोई जवानी में गुरु करते हैं, कोई बूढ़ापे में गुरु करते हैं, कोई छोटेपन में ही गुरु करते हैं। छोटेपन में ही सन्यास ले लेते हैं। कुम्भ के मेले पर बहुत छोटे2 नागे आते हैं। सतयुग में तो यह कुछ भी नहीं होगा। तुम बच्चों की स्मृति में सभी बातें आ गई हैं। रचयिता और रचना के आदि–मध्य–अन्त को तो तुम जानते हो। उन्होंने तो कल्प की आयु ही बड़ी कर दी है। ईश्वर सर्वव्यापी कह दिया है ज्ञान का कुछ भी पता ही नहीं। बाप आकर अज्ञान नींद से सुजाग करते हैं। अभी तुमको ज्ञान की धारणा होती जाती है। बैटरी भरती जाती है।

ज्ञान से ही कमाई। भक्ति से है घाटा। टाइम पर जब घाटे का समय पूरा होता है तो फिर बाप कमाई कराने आते हैं। मुक्ति में जाना है वह भी कमाई है ना। शान्ति तो सभी मांगते रहते हैं। शांति देवा कहने से ही बुद्धि बाप तरफ चली जाती है। कहते हैं विश्व में शान्ति हो; परन्तु वह कैसे होगी यह भी किसको पता नहीं। शान्तिधाम, सुखधाम अलग होते हैं। यह भी नहीं जानते हैं। यह जो पहला नम्बर है उनको भी कुछ पता नहीं था। जैसे कि जनावर बुद्धि थे। अभी तुमको सारी नारी नॉलेज है। तुम जानते हो हम इस कर्म क्षेत्र पर पार्ट बजाने आये हैं। कहाँ से आये हैं? ब्रह्मलोक निराकारी दुनिया से आये हैं इस साकारी दुनिया में पार्ट बजाने। हम आत्माएँ दूसरे जगह के रहने वाली हैं। यहाँ यह 5 तत्वों को शरीर रहता है। आत्मा अभी कहती है मैं शान्तिधाम का रहने वाला हूँ। यहाँ आया हूँ पार्ट बजाने। शरीर है तब हम बोल सकते हैं। हम चैतन्य पार्टधारी हैं। तुम अभी ऐसे नहीं कहेंगे कि इस ड्रामा के आदि–मध्य–अन्त को हम नहीं जानते हैं। आगे नहीं जानते थे। अपने बाप को, घर को, अपने रूप को यर्थात रीति हम नहीं जानते थे। अभी जानते हैं आत्मा 84 का पार्ट बजाती रहती है। स्मृति आई है। आगे नहीं जानते थे। इसलिए तमोप्रधान पत्थर बुद्धि कहा जाता था। शास्त्रों में तो बहुत ही गपोड़े लगा दिये हैं। वह झूठ पढ़ते2 तुम झूठ बन गये हो। अभी फिर बाप आकर सच्चा बनाते हैं। जिससे तुम सच खण्ड के मालिक बन जाते हो। सच के ऊपर भी सुखमनि में है। सत्य कहा जाता है सत्य खण्ड को। देवताएँ सभी सच बोलने वाले होते हैं। सच सिखलाने वाला है बाप। उनकी महिमा देखो कितनी है। गाई हुई महिमा ही तुमको काम आती है। शिवबाबा की महिमा करते हैं। वही झाड़ के आदि–मध्य–अन्त को जानते हैं। सच्चा बाप सुनाते हैं तो तुम सच बन जाते हो। सच खण्ड भी बन जाता। भारत ही सच खण्ड था। नम्बरवन ऊँच ते ऊँच तीर्थ भी यह है क्योंकि सर्व की सद्गति करने वाला बाप भारत में ही आते हैं। एक धर्म की स्थापना बाकी सभी धर्मों का विनाश कर देते हैं।

बाप ने समझाया है सूक्ष्मवतन में कुछ है नहीं। यह सभी सा0 होते हैं। भक्तिमार्ग में भी साक्षात्कार होते हैं। सा0 न होता तो इतने मंदिर, इतनी पूजा आदि क्यों होती। सा0 करते हैं। फील करते हैं यह चैतन्य थे। बाप समझाते हैं भक्तिमार्ग में जो कुछ मंदिर आदि बनते हैं जो तुमने सुना, देखा है वह सभी रिपीट होगा। चक्र फिरता ही रहता है। ज्ञान और भक्ति का खेल बना हुआ है। हमेशा कहते हैं ज्ञान भक्ति वैराग्य; परन्तु डिटेल कुछ नहीं जानते। बाप बैठ समझाते हैं ज्ञान है दिन, भक्ति है रात। वैराग्य है रात का। फिर दिन होता है। भक्ति का वैराग्य। भक्ति में है दुख इसलिए उनका वैराग्य। सुख का तो वैराग्य नहीं कहेंगे। सुख को कोई त्याग थोड़े ही करेंगे। सन्यास आदि भी दुख के कारण लेते हैं। स्त्री को नागिन समझकर चले जाते हैं। समझते हैं पवित्रता में सुख है। आजकल तो धनवान भी बनते हैं; क्योंकि सम्पत्ति बिगर तो सुख मिल न सके। माया वार की जंगल से फिर घर ले आती है। विवेकानन्द और रामतीर्थ यह दो बड़े सन्यासी हो गये हैं। सन्यासी की ताकत रामतीर्थ में थी। बाकी भक्ति का समझाना करना यह विवेकानन्द का था। दोनों के पुस्तक थे। पुस्तक जब लिखते थे तो एकाग्रचित हो बैठ लिखते हैं। रामतीर्थ अपना वाल्युम बैठ लिखते थे तो शिष्य को भी कहा तुम दूर जाकर रहो। था बहुत तीखा कड़ा सन्यासी। नाम भी बहुत है। बाप ऐसे नहीं कहते कि स्त्री को माँ कहो। बाप तो कहते हैं उनको भी बहन समझो। आत्माएँ तो सभी भाई2 हैं। सन्यासियों की बात है अलग। उसने स्त्री को माँ समझा। माँ की बैठ बड़ाई की है। यह ज्ञान का रास्ता है। वह वैराग्य की बात अलग है। वैराग्य में आकर माता को स्त्री कह दिया। माता अक्षर में क्रिमनल आई नहीं होगी। बहन में भी क्रिमनल दृष्टि जावेगी। माता में कब खराब ख्याल नहीं जावेगा। बहन से जास्ती है। शादी भी कर लेते हैं। बाप की बच्ची में भी क्रिमनल दृष्टि जा सकती है। माँ में कभी नहीं जावेगी। सन्यासी स्त्री को भी माँ समझने लगा। उनके लिए फिर ऐसे नहीं कहेंगे फिर दुनिया कैसे चलेगी। पैदाइश कैसे होगी। वह तो एक को वैराग्य आया,

माँ कह दिया। उनकी महिमा देखो कितनी है। यहाँ तो बहन भाई कहने से भी बहुतों की दृष्टि चली जाती है। यह है ज्ञान की बात। वह तो एक की बात है। यहाँ तो प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान ढेर भाई–बहन हैं। वह तो एक ने करके स्त्री को माँ कहा, वह है भक्ति मार्ग। यह है ज्ञान मार्ग। बाप बैठ सभी बातें समझाते हैं। यह भी तो शास्त्रों आदि से पढ़ा हुआ है ना। वह धर्म ही अलग है निवृत्ति मार्ग का। सिर्फ पुरुषों के लिए हैं। वह है हद का वैराग्य तुम्हारा तो सारी दुनिया से वैराग्य है। वह है हद की बातें। संगम पर ही आकर बाप बेहद की बातें समझाते हैं। इस पुरानी दुनिया से वैराग्य करना है। यह भी बहुत पतित छी–छी दुनिया है। यहाँ शरीर पावन हो न सके। आत्मा को नया शरीर सतयुग में ही मिलता है। भल आत्मा यहाँ पवित्र बनती है; परन्तु शरीर फिर भी अपवित्र ही रहता है। जब तक कर्मातीत अवस्था हो यह शरीर खत्म हो जाये। सोने में खाद पड़ती है तो जेवर भी खाद वाला बनता है। खाद निकल जाये तो जेवर भी सच्चा बनेगा। इन ल0ना0 की आत्मा और शरीर दोनों सतोप्रधान है, तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों तमोप्रधान काली है। आत्मा काम चिक्षा पर बैठ शरीर साथ तो काली हो गई है। इसलिए कृष्ण को ही श्याम–सुन्दर कहते हैं; क्योंकि नम्बरवन में है। आत्मा काम चिक्षा पर बैठ काली बन गई है। अभी नर्क को लात मार रहे हैं। नम्बरवन में यह काला होता है। राम को भी काला बना दिया है; परन्तु क्या काला बनाया है उसका किसको भी पता नहीं। अभी तुम समझते हो देवताओं के चित्र काले क्यों बनाये हैं, क्योंकि वाममार्ग में गये हैं। फिर उस समय तो देवताएँ हैं नहीं। बाप कहते हैं फिर हम आकर सांवरे से गोरा बनाते हैं। यह ज्ञान की सारी बात है। बाकी पानी आदि की बात ही नहीं। सभी काम चिक्षा पर बैठ पतित बन गये हैं इसलिए राखी बांधवाई जाती है। पावन बनने की प्रतिज्ञा करो। बाप कहते हैं हम आत्माओं से बात करते हैं। मैं आत्माओं का बाप हूँ। जिसको तुम याद करते आये हो बाबा आओ, हमको सुखधाम ले चलो। दुख हरो। कलियुग में होते हैं दुख। बाप समझाते हैं तुम काम चिक्षा पर बैठ काले, तमोप्रधान बन पड़े हो। अभी मैं आया हूँ काम चिक्षा से उतार ज्ञान चिक्षा पर बिठाने। अभी पवित्र बन स्वर्ग में चलना है। बाप को याद करना है। बाप कशिश करते हैं ना। बाप के पास युगल आते हैं एक को कशिश होती है, दूसरे को नहीं होती। पुरुष ने फट से कह दिया हम यह अन्तिम जन्म पवित्र रहेंगे। काम चिक्षा पर नहीं चढ़ेंगे। ऐसे नहीं कि निश्चय हो गया। निश्चय अगर होता तो बेहद के बाप को चिट्ठी लिखते कनेक्शन में रहते। सुना है पवित्र रहते हैं। बाकी पहचान कुछ नहीं है कि बेहद के बाप से बेहद का वरसा लेना है। मुरली पढ़नी है। वह कुछ नहीं है। अपने धंधे आदि में ही मस्त रहते हैं। बाप की याद ही कहाँ। ऐसे बाप को तो बहुत याद करना चाहिए। स्त्री–पुरुष का आपस में कितना प्यार होता है। पति को कितना याद करती है। बेहद के बाप को तो सभी से जास्ती याद करना चाहिए। गायन भी है ना प्यार करो चाहे ठुकराओ। हम हाथ कब नहीं छोड़ेंगे। ऐसे नहीं यहाँ आकर रहना है। वह तो फिर सन्यास हो गया। घर–बार छोड़कर यहाँ आकर रहे। तुमको तो कहा जाता है गृहस्थ व्यवहार में रहते.....यह पहले तो भट्ठी थी। जिससे इतने तैयार हो निकले। इनका भी बहुत अच्छा विस्तार है। जो बाप के बन जाते हैं वह फिर अन्दर के दास–दासियाँ आदि बनते हैं; क्योंकि रूहानी सर्विस तो करते ही नहीं। तो दास–दासियाँ बनते2 फिर पिछाड़ी में नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ताज मिल जाता है। इन्हों का भी घराणा होता है। प्रजा से नहीं आ सकते। बाहर वाले आकर अन्दर का नहीं बन सकते। बल्लभाचारी बाहर वाले को कब अन्दर नहीं आने देते। यह सभी समझने की बातें हैं। गीता है भी सेकण्ड की। फिर बाप को ज्ञान सागर क्यों कहा जाता? समझाते ही रहते हैं। पिछाड़ी तक समझाते रहेंगे। जब राजधानी स्थापन हो जावेगी, तुम कर्मातीत अवस्था को आ जावेंगे फिर ज्ञान पूरा हो जावेगा। है सेकण्ड की बात; परन्तु फिर समझाना पड़ता है। हद के बाप से हद का वरसा, बेहद के बाप से बेहद का विश्व के मालिकपना देते हैं। तुम सुखधाम में जावेंगे बाकी सभी शान्तिधाम में चले जावेंगे। वहाँ तो सुख ही सुख है। यह तो खातरी है बाप आये हैं हम नई दुनिया के मालिक बन रहे हैं राजयोग की पढ़ाई से। अच्छा मीठे2 बच्चों को यादप्यार। गुडमार्निंग और नमस्ते।